श्री कपासन माताजी स्तुती

हाथ जोड विनती करू, सुनजीयो चित्त लगाय ।
दास आ गयो शरण में, रखियो इसकी लाज ।।

धन्य ढूंढारो देश है, मेड विराट सुजान ।
अनुपम छवि श्री कपासन की, दर्शन से कल्याण ।।

मैया-मैया नित मै रटू, मैया है जीवन प्राण।
मैया भक्त जग में बडे उनको करू प्रणाम ।।

बाण गंगा मेड में बण्यो आपको धाम ।
मेड वाली कपासन तेरी. महिमा बडी महान।।

माघ शुक्ला पुर्णिमा उत्सव भारी होय ।
कपासन के दरबार से, खाली न जाय कोय ।

पान सुपारी इलायची अंतर सुगंधी भरपूर ।
सब भक्तन की विनती, दर्शन देवो खूब ।।

मैया भक्त तो प्रेम से धरे मैया का ध्यान।
खुंटेटा परीवार पावे, सदा मैया कृपा से मान।।

।। क्षमा प्रार्थना ।।

यानि कानि च पापनि, जन्मान्तर कृतानि च ।
तानि तानि प्रणस्युन्तु, प्रदक्षिण पदे पदे ।।

आरती श्री कपासन माताजी की

ॐ जय श्री कपासन माता, मैया जय श्री कपासन माता ।
शीशमहल में विराजत, सब सुख की दाता ।। ॐ जय ।।
अंतर, रोली, मोली चावल चुनडी, करे तुझको अर्पण ।
हम भक्तो को मैया, लागी तेरी लगन ।। ॐ जय ।।
भक्तो में तू किरपा करती, किरपा से कल्याण ।
महिमा सबसे न्यारी, तू बस्ती कण-कण ।। ॐ जय ।।
झाँझ,मंजीरे, ढोल, नगाडे नित नौबत बाजे ।
चरण कमल पैजनीया, बाजै है छन-छन ।। ॐ जय ।।
तेरी किरपा जिस पर होती, सुख पाता हर क्षण ।
वृष्टि दया दष्टि, पाते हर इक जन ।। ॐ जय ।।
उंचा भवन माँ तेरा, करू तुझको मै नमन।
इस पुज्य की ''खुशबू'' कर देती है मगन ।। ॐ जय ।।
बाणगंगा मेड में बण्यों धाम है आवे नर नारी ।
जहाँ नित होती है आरती, होते है तेरे भजन ।। ॐ जय ।।
तन-मन-धन ये जीवन, सब कुछ है तेरा ।
तेरी सेवा में अर्पण, क्या लागे मेरा ।। ॐ जय ।।
मैया कपासन माता की आरती, जो कोई गावे ।
सदा सुखी नित रहता, सुख संम्पति पाता ।। ॐ जय ।।
ॐ जय श्री कपासन माता, मैया जय कपासन माता ।
खुंटेटा परीवार तेरे गुण गाता,
शुभ फल की दाता ।। ॐ जय ।।